।। ओ३म् ।।

त्रि-दिवसीय क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

दिनांक १७.०१.२०१० को दोपहर ६:३० बजे सम्पन्न हुआ।

भावनगर में दिनांक १५-१६-१७ नवम्बर २०१० को विशाल पण्डाल में १०० हवन कुण्डों पर सपत्निक यजमानों को पूज्य सन्त आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्यः जी दर्शनाचार्य-दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) के निर्देशन में.आर्यसमाज, भावनगर के तत्त्वावधान में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्यः जी ने इन दिनों के दौरान यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्त्व तथा रहस्यों की वैज्ञानिक विवेचना की। साथ में सपत्निक यजमानों (शिविरार्थियों) को यज्ञ मंत्रों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया। यज्ञ को लेकर विशेष शंकाओं का समाधान भी कराया गया। उन्होंने कहा यज्ञ से लोगों में कल्याण की भावना उत्पन्न होती है तथा उत्तम कर्म करने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति लोगों के कर्त्तव्यों के पालन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति ही भारत की संस्कृति है। वेद मार्ग पर चलने से ही विश्व में शान्ति हो सकती है। उन्होंने कहा कि जबसे हमने स्वयं को ईश्वर एवं यज्ञ से अलग कर लिया है, तब से ही हम अशान्त, दुःखी, परेशान, भयभीत...आदि है। अन्तिम दिन उहोंने शिविरार्थियों (सपत्निक यजमानों) से दक्षिणा के रूप में प्रतिदिन/साप्ताहिक/पाक्षिक यज्ञ करने का संकल्प भी लिया। शिविरार्थियों ने बड़ी श्रद्धा व उत्साह से अपने संकल्प-पत्र आचार्य-प्रवर को समर्पित किए। इस शिविर के संयोजक आर्यसमाज, भावनगर द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई।

शिविरार्थी के रूप में अपने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि इस त्रि-दिवसीय शिविर में आकर हमें जो कुछ सुनने, सीखने, समझने को मिला है-वह अब तक के जीवन में नहीं मिला था। इन तीन दिनों में मेरी पूरी दिनचर्या ही बदल गई। आज पूज्य आचार्य जी द्वारा की गई व्याख्या से मेरी आँखें खुली रह गई। पूज्य सन्त आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्यः जी ने भावनगर में इस अद्भूत कार्यक्रम के माध्यम से अनेक नये घरों में यज्ञ की ज्योती को जलाया है। इससे एक पुण्य कर्म करने की प्रेरणा हमें मिली है। यह कार्यक्रम हमें बहुत पहले मिला होता तो अब तक हम अधिक उन्नति कर पाते।

अंत में शिविर के समापन अवसर पर संयोजक आदि ने परमपिता परमात्मा का विशेष धन्यवाद करते हुए एवं पूज्य सन्त आचार्य श्री ज्ञानेश्वरार्य: जी व सभी विद्वानों, विशिष्ट अतिथियों, अन्य सहयोगी संस्थाओं , श्रोताओं, कार्यकत्ताओं/स्वयं-सेवकों तथा दानी महानुभावों के प्रति धन्यवाद प्रकट करते हुए कृतज्ञता प्रकट की ।

शिविर की विशेषताएँ :-

१) हवन कुण्डों पर सपत्निक लगभग २०० यजमानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

२) इस शिविर में नये लगभग १८० यजमानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

३) अन्तिम दिन प्रत्येक शिविरार्थी को हवन कुण्ड, घृत-पात्र, चम्मच, समिधा, हवन सामग्री, आदि टोकन मूल्य पर प्रदान की गई ।

४) शुद्ध गाय की घी व ऋतु अनुकुल सुगन्धित सामग्री का प्रयोग हुआ ।

५) प्रतिदिन प्रत्येक सभा में हजारों श्रोताओं की उपस्थिति से पण्डाल खचाखच भरा रहता था ।

६) शिविर की व्यवस्था पर लगभग दो लाख रुपए का व्यय हुआ ।

७) ग्रामीणांचल से लोगों ने इस शिविर में बढ़-चढ़ कर भाग लिया ।

८) नगर में व आस-पास के क्षेत्र में चारों ओर इस शिविर की प्रशंसा हो रही है । तथा भविष्य में ऐसे आयोजन की पुन: मांग भी हो रही है ।